विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग संस्थान की एक अनुपम भेंट

अखण्ड भारत सन्देश

पाक्षिक

वर्ष 2 अंक 8 | विक्रम सम्वत् 2058 | शाके 1922 | आरोही द्वापरयुग का 303 वर्ष | 15 फरवरी-28 फरवरी,

क्रियायोग.. सर्वोच्च शिक्षा

देवरिया में 10 दिवसीय क्रियायोग प्रशिक्षण शिविर

क्रियायोग के व्यापक विस्तार द्वारा जनमानस के अंदर सुषुप्त अनन्त शक्ति, ज्ञान, व सम्भावनाओं को जागृत करने के उद्देश्य से देवरिया में 10 दिवसीय क्रियायोग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। 10 फरवरी से 19 फरवरी, 2003 तक चलने वाले कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् के द्वारा विभिन्न विद्यालयों, संस्थाओं, ग्रामीण अंचल आदि में क्रियायोग का विधिवत् प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम का मुख्य स्थान कस्तूरबा राजकीय बालिका इण्टर कालेज था, जिसमें प्रतिदिन स्वामी जी के द्वारा प्रातः, दोपहर व सायंकालीन कक्षा में क्रियायोग का वृहद् प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम में भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया और शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया। यहाँ पर देवरिया में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम् के द्वारा व्यक्त विचारों का संक्षिप्त अंश निम्नलिखित तथ्यों के रूप में दिया जा रहा है -

कथनी करनी के बीच एकता से सत्य की अनुभूति

क्रियायोग कथनी व करनी के बीच दूरी शून्य करने का विज्ञान है। कथनी करनी के बीच दूरी शून्य होने पर मनुष्य के अंदर योग अवस्था का विकास होता है। योग अपने आठ अंगों - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि के साथ प्रकट होता है। योग में यम के अन्तर्गत सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह व अस्तेय है। योग अवस्था के प्रकट होने पर मनुष्य सत्य व अहिंसा में स्थापित हो जाता है। ऐसी अवस्था में मनुष्य की बीमारी, चिन्ता, अज्ञानता, समूल नष्ट हो जाती है और वह अनन्त शक्ति ज्ञान की प्राप्ति कर लेता है।

क्रियायोग का अभ्यास कराते हुए गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

क्रियायोग से मन के अंधेपन का समापन

वर्तमान युग आरोही द्वापर का 303वाँ वर्ष है। द्वापर युग में मनुष्य के अंदर चित्त व अहंकार शक्तियाँ प्रकाशित रहती हैं। अंधा मन शरीर पर शासन करता है और बुद्धि सुषुप्त रहती है। अंधे मन के कारण इन्द्रियाँ भी अंधवत् कार्य करती हैं। अपने अंदर को अंधा मन महाभारत काल के धृतराष्ट्र तथा इन्द्रियाँ गान्धारी के समरूप हैं। जिस प्रकार धृतराष्ट्र, गान्धारी के साथ थे उसी प्रकार अंधा मन इन्द्रियों के साथ रहता है। अंधे मन का शरीर में शासन होने के कारण मनुष्य गल्तियाँ करता है और वह बीमारी, चिन्ता व अज्ञानता का शिकार होता है। क्रियायोग के अभ्यास से मन और इन्द्रियों का अंधापन दूर हो जाता है। ऐसा होने पर मनुष्य इच्छानुसार समय तक शरीर को बनाये रखने की क्षमता प्राप्त कर लेता है और उसके अन्दर सुषुप्त अनन्त शक्ति, ज्ञान प्रकाशित होने लगता है।

आज शिक्षा में पढ़कर, लिखकर ज्ञान प्राप्त करने का विधान है। पढ़ने, लिखने से वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। आइये! इसके कारण पर विचार करें आप दो सेब खाकर दोनों के स्वाद के बारे में न तो लिख सकते हैं और न ही बता सकते हैं। अतः सत्य अनुभूति को लिखा या बताया नहीं जा सकती है। इसलिए वास्तविक ज्ञान पढ़ने-लिखने से प्राप्त नहीं होता है।

क्रियायोग ज्ञान प्राप्त करने का सर्वोच्च मार्ग है। क्रियायोग के अभ्यास में मनुष्य अपने बारे में ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करता है। मनुष्य के स्वरूप का एक-एक बिन्दु पूरे ब्रह्माण्ड से जुड़ा हुआ है। अतः अपने बारे में ज्ञान प्राप्त होने पर मनुष्य पूरे ब्रह्माण्ड के बारे में अल्पकाल में ज्ञान प्राप्त कर लेता है। क्रियायोग अभ्यास से जैसे-जैसे मनुष्य ज्ञानी होता है वैसे-वैसे वह बीमारी, चिन्ता आदि से मुक्त हो जाता है।

2 & 11
Bakreid
बकरीद : क्रियायोगिक व्याख्या

13
धर्म की संकीर्णता से ऊपर उठकर वसुधैव कुटुम्बकम की स्थापना

12
Upnayan Sanskaar
उपनयन संस्कार : प्राचीनतम आध्यात्मिक शिक्षा

9
Tea Is Best Without Milk And Sugar